आधुनिक भारतीय चित्रकला में ईसाई विषय एवं बाइबिल पात्रों की पुनर्व्याख्याः यामिनी रॉय, कृष्ण खन्ना, एम. एफ. हुसैन के विशेष संदर्भ में

डॉ नाजिमा इरफान
सहायक प्रोफेसर
(ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी.जी कॉलेज, मेरठ
ईमेलः drnazimairfan@gmail.com

वंशिका गुप्ता
शोध छात्रा
(ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग)
रघुनाथ गर्ल्स पी.जी कॉलेज, मेरठ
ईमेलः msvanshigupta2003@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 03-06-26
Approved: 16-06-26

डॉ नाजिमा इरफान
वंशिका गुप्ता

आधुनिक भारतीय चित्रकला में ईसाई विषय एवं बाइबिल पात्रों की पुनर्व्याख्याः यामिनी रॉय, कृष्ण खन्ना, एम. एफ. हुसैन के विशेष संदर्भ में

Artistic Narration 2026,
Vol. XVII, No. 1,
Article No.27 Pg.222-229

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2026-vol-xvii-no1

Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2026.v17i01.027*

सारांश

यह शोधपत्र आधुनिक भारतीय कला में यीशु मसीह के चित्रण को कलाकारों पर केंद्रित हैं। मैंने यामिनी रॉय, कृष्ण खन्ना तथा एम. एफ. हुसैन द्वारा बनाए गए यीशु मसीह के चित्रों का अध्ययन किया हैं। इन सब कलाकारों ने ईसाई विषयवस्तु को भारतीय संस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। यामिनी रॉय ने लोकशैली और सरल रेखाओं से यीशु के मानवीय स्वरूप को उभारा हैं। कृष्ण खन्ना ने पीड़ा, करुणा और सामाजिक संवेदना के द्वारा यीशु मसीह को अपने चित्रों में व्यक्त किया। एम. एफ. हुसैन ने प्रतीकात्मक और आधुनिक शैली के माध्यम से यीशु को नई पहचान दी। प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक भारतीय कलाकारों द्वारा यीशु मसीह के कलात्मक चित्रण के महत्व को रेखांकित करता हैं। आधुनिक भारतीय कलाकारों द्वारा बाइबल पात्रों की पुनःव्याख्या, ईसाई विषयो के भारतीयकरण, मानवीकरण और समकालीन सामाजिक संदर्भों से उनके गहरे संबंध को दर्शाती हैं। मैंने अपने शोध पत्र के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया हैं।

मुख्य शब्द

ईसाई धर्म, यीशु मसीह, ईसा मसीह, आध्यात्मिक अभिव्यक्ति यामिनी रॉय की कला, कृष्ण खन्ना के धार्मिक चित्र, एम.एफ. हुसैन के प्रतीकात्मक शैली, आधुनिक भारतीय कला।

उद्देश्य- मेरा शोध का प्रमुख उद्देश्य आधुनिक भारतीय कला में ईसा मसीह के चित्रण का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यामिनी रॉय, कृष्ण खन्ना तथा एम.एफ. हुसैन की कृतियों के संदर्भ में हैं। यह शोध इस तथ्य की खोज करता है कि किस प्रकार इन कलाकारों ने ईसाई धार्मिक विषयवस्तु को भारतीय सांस्कृतिक और कलात्मक परंपरा के अनुरूप रूपांतरित किया। इस अध्ययन का एक मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि भारतीय आधुनिक कला में यीशु मसीह की छवि किस प्रकार केवल धार्मिक प्रतीक न रहकर मानवीय संवेदना, करुणा, त्याग और अध्यात्मिक चेतना का सार्वभौमिक प्रतीक बन जाता है। इसके अंतर्गत कलाकारों की शैलीगत विशेषताएं जैसे रेखांकन, रंग योजना, संरचना, प्रतीकात्मकता और भावाभिव्यक्ति का विश्लेषण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त यह शोध धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय के संदर्भ में भी इन कृतियों के महत्त्व को रेखांकित करता है। भारतीय बहुसांस्कृतिक समाज में विभिन्न धर्मों और परंपराओं के बीच संवाद स्थापित करने में कला की भूमिका क्या है? इस प्रश्न का उत्तर भी इस अध्ययन के माध्यम से खोजने का प्रयास किया गया है।

महत्व – मेरे शोध पत्र से आधुनिक भारतीय कला में यीशु मसीह के जीवन चित्रण का विश्लेषण करते हुए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कलात्मक विमर्श को सामने लाना है। विशेष रूप से यामिनी रॉय, कृष्ण खन्ना तथा एम.एफ. हुसैन की कृतियों के संदर्भ से यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि भारतीय कलाकारों ने एक पश्चिमी धार्मिक विषयों की किस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक संवेदना और आधुनिक अभिव्यक्ति के माध्यम से पुनर्परिभाषित किया है।

1. इस शोध का पहला प्रमुख महत्त्व यह है कि आधुनिक भारतीय कला में अंतर सांस्कृतिक संवाद को रेखांकित करना।
2. यह शोध धार्मिक विषयों के आधुनिक संदर्भ में पुर्नपाठ की प्रक्रिया को समझना है। इन कलाकारों ने यीशु के जीवन प्रसंगों जैसे 'अंतिम भोज' और 'क्रूस पर चढ़ना' को केवल धार्मिक अध्ययन के रूप में नहीं बल्कि मानवीय पीड़ा, संघर्ष और सामाजिक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना हैं।

प्रस्तावना - भारतीय कला की परंपरा अत्यंत प्राचीन समृद्ध एवं विविधतापूर्ण रही है। भारतीय कला में धार्मिक सांस्कृतिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक विषयों का विशेष नियोजन रहा है। प्रारंभ से ही भारतीय कलाकारों ने अपनी कला के द्वारा जीवन, प्रगति, आधुनिक काल में भी इस परंपरा का निरंतर विकास होता रहा है। आधुनिक भारतीय कलाकारों ने पारंपरिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के साथ–साथ वैश्विक विषयों में से एक महत्वपूर्ण विषय ईसाई धर्म से संबंधित ईशु मसीह का चित्रण है। यीशु मसीह को ईसाई धर्म के प्रमुख आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में भी माना जाता है। प्रेम करुणा, त्याग और मानवता के संदेश के लिए जाने जाते हैं। भारतीय समाज में भी ईसा मसीह के विचारों और जीवन मूल्यों को सम्मान की दृष्टि से देखा गया है, यही कारण है कि अनेक भारतीय कलाकारों ने अपने चित्रों में ईसा मसीहा को भारतीय दृष्टिकोण और सांस्कृतिक संवेदना के साथ प्रस्तुत किया। इस शोध में विशेष रूप से यामिनी रॉय, कृष्ण खन्ना तथा एम.एफ. हुसैन द्वारा निर्मित ईसा मसीहा के जीवन से संबंधित कलाकृतियों का अध्ययन किया गया।

यीशु मसीह पर आधारित यामिनी रॉय की कला

यामिनी रॉय आधुनिक भारतीय कला में इतिहास में एक प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने अपनी कला में लोक शैली सरल रेखाओं और सीमित रंगों का प्रयोग किया। यामिनी रॉय द्वारा बनाए गए, यीशु मसीहा के

चित्रों में भारतीय लोक कला की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। यामिनी रॉय ने ईसाई धार्मिक विषयों को भारतीय परंपरा से जोड़ते हुए एक नई पहचान दिलाई। उनके चित्रों में यीशु का स्वरूप अत्यंत सरल मानवीय और संवेदनशील उप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे दर्षक भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं जामिनी रोहिणी इशू को पारंपरिक यूरोपीय शैली में प्रस्तुत न करके भारतीय लोक सौंदर्यबोध के अनुरूप चित्रित किया।

यामिनी रॉय की कृत्यों में मोटी और स्पश्ट रेखाएं सपाट रंगों तथा सीमित रंग रंग संयोजन का प्रयोग देखने को मिलता है यामिनी रॉय ने यीशु का स्वरूप उन्हें चित्रों में अत्यंत सरल से करूणामय और मानवीय भावों से युक्त दिखाई देता है। ईसा मसीह के चित्रों में आध्यात्मिकता के साथ–साथ भारतीय सांस्कृतिक संवेदना का समावेश रूप से दिखाई हैं। मैंने अपने शोध लेखन में यामिनी रॉय द्वारा महत्वपूर्ण दो गलतियों का उल्लेख किया है अंतिम भोज (last supper) एवं क्रूज पर चढ़ना (Crucifixion)।

अंतिम भोज – यामिनी रॉय द्वारा निर्मित अंतिम भोज उनकी यीशु मसीह विषयक कृतियों में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस चित्र में उन्होंने अंतिम भोज के दृश्य को अत्यंत सरल और प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया। पारंपरिक यूरोपीय चित्रण की जटिलता के स्थान पर उन्होंने समरूप आकृति को स्पष्ट सीमा रेखाओं और सपाट रंगों का प्रयोग किया। चित्र में यीशु मसीहा के शिशुओं को समान रूपाकार में दिखाया है। जिससे सामूहिकता और आध्यात्मिक एकता का भाव प्रकट होता है। चित्र में यीशु की आकृति बाकी सभी आकृतियों से अलग दिखती है, क्योंकि उनकी आकृतियों को पीले रंग से बनाया गया है एवं उनकी आकृति का अनुपात बाकी आकृतियों से थोड़ा बड़ा है। यह चित्र काफी प्रभावशाली है, क्योंकि इस चित्र में सभी आकृतियाँ सामने से दिखाई गई है और सीधे दर्शक की ओर देख रहे हैं ऐसा मालूम होता है, सभी शिष्य लगभग समान रूपाकार में दिखाई देते हैं। जिससे सामूहिकता और आध्यात्मिक एकता का भाव प्रकट होता है यह प्रतिबद्ध भाव अभिव्यक्ति का बाहें अड़बर से मुक्त होकर अन्तनिहित आध्यात्मिक शांति को व्यक्त करती हैं।

अंतिम भोज में यामिनी ने कालीघाट शैली के तत्वों का प्रयोग किया है

मोटी और अस्पष्ट बाह्यरेखाओं को 'अंतिम भोज' में डाला है। यामिनी रॉय ने अंतिम भोज में सभी आकृतियों को स्पष्ट काली रेखाओं के द्वारा उभारा हैं। कालीघ शैली की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि मोटी गहरी और प्रभावमई रेखाएँ जो यामिनी रॉय ने अंतिम भोज चित्र में आकृतियों के द्वारा दर्शाया है। यामिनी रॉय ने बहुत चित्र में रंगों का प्रयोग कालीघाट चित्रों के सामान रंगों से दर्शाया हैं। यहीं विशेषता यामिनी रॉय ने अपने चित्र में ठोस एवं सपाट रंगों के द्वारा बनाया है। इससे इस क्षेत्र में सजावटी और लोग शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता हैं।

https://doi.org/10.31995/an.2026.v17i01.027

क्रूस पर चढ़ना (Crucifixion) –इसी प्रकार 'क्रूस पर चढ़ना' चित्र यामिनी रॉय ने यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की घटना को अत्यंत मार्मिक और मानवीय रूप से चित्रित किया है। केंद्र में स्थित यीशु मसीह की आकृतियाँ चाहे, वे बाल रूप में हो या सूली पर चढ़ाए गए हो और उनके साथ के पात्र पटुआ समुदाय के लोग शैली मैं चित्रित किए गए हैं। इस कृति में भी मोटी काली रेखाओं सपाट रंगों और सरल संरचना का उपयोग दिखाई देता है। यीशु का स्वरूप, करुणा, त्याग और धैर्य का प्रतीक बनकर उभरता है। यही कृति केवल धार्मिक प्रसंग का चित्रण नहीं बल्कि मानव पीड़ा और सहनशीलता का सार्वभौमिक प्रतीक बन जाती है। इन दोनों कृतियों के माध्यम से स्पष्ट होता है कि यामिनी रॉय ने ईसाई विषयवस्तु को भारतीय लोक कला की आत्मा के साथ जोड़ा है। उन्होंने यीशु को किसी विदेशी धार्मिक प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया उनकी शैली में भारतीयता सरलता और आध्यात्मिक गहराई का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। अतः इस शोध पत्र में यामिनी रॉय की अंतिम भोज और क्रूज पर चढ़ना जैसी कृतियों के विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है, कि किस प्रकार उन्होंने भारतीय लोक शैली में ईसा मसीह को जीवंत किया। उनकी ये दोनों कृतियाँ एवं सभी इसी प्रकार का कृतियां न केवल कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वे भारतीय कला के धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय और मानवीय मूल्यों के अभिव्यक्ति का भी सशक्त उदाहरण है।

यीशु मसीह पर आधारित कृषि खन्ना की कला

कृष्ण खन्ना का जन्म 5 जुलाई 1925 में हुआ। कृष्ण खन्ना एक भारतीय चित्रकार हैं, जो देश के गलियो के दृश्यों को दर्शाने वाले अपने अमूर्त चित्रात्मक कलाकृतियों के लिए जाने जाते हैं। वे एक स्व शिक्षित कलाकार हैं, जिनकी चित्रकला में भारतीय मुहावरों और मानवीय मूल्यों की झलक मिलती है। कृष्ण खन्ना ने अपनी कला के सामाजिक यथार्थ मानवीय पीड़ा और संवेदना को प्रमुखता थी। आधुनिक भारतीय कला में कृष्ण खन्ना का विशेष स्थान रहा है। कृष्ण खन्ना प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट रूप से जुड़ें प्रमुख कलाकारों में एक रहे हैं। कृष्ण खन्ना की कृतियों में ईसा मसीहा संबंधित विषयक कृतियाँ विशेष महत्त्व रखती है।

कृष्ण खन्ना ने यीशु को पारम्परिक धार्मिक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करने के स्थान पर एक पीड़ित, संघर्षशील और मानवीय व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है। उनके चित्रों में क्रूस पर चढ़े हुए यीशु का स्वरूप मानव जीवन की वेदना और त्याग का सार्वभौमिक प्रतीक बन जाता है। कृष्ण खन्ना रंगों और रेखाओं के माध्यम से भावनात्मक तीव्रता उत्पन्न करते हैं, जिससे दर्शक चित्र के साथ गहरे स्तर पर जुड़ता है। उनकी यीशु विषयक कृतियो में करुणा, दया और सहानुभूति के साथ–साथ सामाजिक अन्याय और मानव पीड़ा का संकेत

भी मिलता है। कृष्ण खन्ना की चित्रकला में भारतीय सांस्कृतिक संवेदना और आधुनिक अभिव्यक्ति का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। कृष्ण खन्ना ने पश्चिमी विषयवस्तु को भारतीय भावभूमि में आत्मसात करते हुए उसे एक नई दृष्टि प्रदान की। उनकी कला में धार्मिक प्रसंगों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति मिलती है, विशेष रूप से उनकी दो महत्वपूर्ण कृतियाँ अंतिम भोज तथा क्रूसारोपण इस दृष्टिकोण को स्पश्ट करती है।

अंतिम भोज (Last Supper) - कृष्ण खन्ना की पेंटिंग अंतिम भोज (लास्ट सपर) जो कैनवास पर तेल रंगों से बनी है। जिसका आकार (72 × 40) इंच है। बाइबल के इस प्रतिष्ठित दृश्य की एक सशक्त पुनर्व्याख्या है, जिसे एक विशिष्ट आधुनिक भारतीय संवेदनशीलता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अंतिम भोज में कृष्ण खन्ना ने अंत के दृश्य को केवल एक धार्मिक घटना के रूप में नहीं बल्कि मानवीय संबंधों और भावनात्मक जटिलताओं के रूप में प्रस्तुत किया है। इस चित्र में आकृतियों का संयोजन अत्यंत अर्थपूर्ण है, ईसा मसीहा और उनके शिष्यों के बीच का संबंध केवल आध्यात्मिक नहीं बल्कि मानवीय संवेदना से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। रंगों का प्रयोग गंभीर और भावनात्मक वातावरण को निर्मित करना है। यहाँ पर प्रकाश और छाया का संतुलन चित्र में गहराई और नाटकीयता को उत्पन्न करना है। कलाकार ने आकृतियों के चेहरे और शारीरिक मुद्राओं माध्यम से आंतरिक दृढ़ विश्वास और आने वाले संकट की आहट को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। यह चित्र दर्शाता है कि किस प्रकार एक धार्मिक प्रसंग को आधुनिक संदर्भ में मानवीय अनुभूति के साथ जोड़ा जा सकता है।

क्रूसारोपण (Crucifixion) – इसी प्रकार क्रूसारोपण विषयक उनकी कृति मार्मिक और प्रभावशाली है। इस चित्र में यीशु को क्रूस पर दर्शाते हुए कलाकार ने पीड़ा और त्याग की अनुभूति को अत्यंत गहन रूप में प्रस्तुत किया है। यह क्रूस केवल धार्मिक प्रतीक नहीं बल्कि मानव जीवन के संघर्ष और अन्याय का संकेत बन जाता है। आकृतियों का सरलीकरण और गहन ही रंग संयोजन चित्र की भावप्रधानता बताता है। यीशु का झुका हुआ शरीर चेहरे की गंभीरता और वातावरण की निस्तब्धता दर्शक को भीतर तक प्रभावित करती है। इस कृति में कृष्ण खन्ना ने बाह्य सौंदर्य के स्थान पर आंतरिक अनुभूति और आध्यात्मिक गहराई को महत्त्व दिया है।

कृष्ण खन्ना की शैली में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और भावनात्मक तीव्रता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वे रेखाओं और रंगों का उपयोग प्रतीकात्मक रूप से करते हैं। जिससे चित्रों में एक व्यापक सामाजिक संदर्भ जुड़ जाता है, उनकी यीशु मसीह कृतियां धार्मिक सीमाओं से परे जाकर मानवता की सार्वभौमिक पीड़ा

और करुणा को व्यक्त करती है। इन दोनों कृतियों के अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है, कि कृष्ण खन्ना ने यीशु मसीहा को भारतीय आधुनिक कला के संवेदना के अनुरूप पुनपरिभाषित किया। कृष्ण खन्ना ने ईसाई धार्मिक प्रसंगों को भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में रूपांतरित किया। जिसमें उनकी कला के सर भौमिक मानवीय मूल्यों के व्यक्ति संभव हुई।

इन कृतियों के विश्लेषण से कृष्ण खन्ना की कृतियां जो बाइबल के विषयक ईसा मसीहा के जीवन चरित्र पर बनी कृतियां को भावनात्मक विषयवस्तु पर चित्रण किया है । कृष्ण खन्ना द्वारा अनेक कृतियों के माध्यम से विश्लेषण करना प्रस्तुत करना कि किस प्रकार कृष्ण खन्ना ने ईसा मसीहा के जीवन प्रसंगों से मानवीय संवेदना और सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़ा। उनकी कृतियां आधुनिक भारतीय कला में धार्मिक विश्वास की नवीन व्याख्या और मानवीय दृष्टिकोण की सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित हुई है।

यीशु मसीह पर आधारित एम.एफ. हुसैन की कला

आधुनिक भारतीय कला के इतिहास में एम.एफ. हुसैन का नाम अत्यंत प्रतिष्ठित एवं और प्रभावशाली कलाकारों की श्रेणी में माना जाता है। वे प्रगतिशील कलाकार समूह (प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप) के प्रमुख सदस्यों में से एक थे, और उन्होंने भारतीय कला को राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाई। हुसैन का जन्म 17 सितंबर 1915 को पंढरपुर में हुआ था। उनके बारे में कुछ पुस्तकों में उनका जन्म स्थान शोलापुर बताया गया है। उनकी कला में आधुनिकता, गतिशीलता, प्रतीकात्मकता तथा संस्कृतिक विविधता का अदभुत समन्वय देखने को मिलता है। एम.एफ. हुसैन ने सांस्कृतिक परंपरा और आधुनिक पाश्चात्य कला के प्रभावों को समन्वित करके करते हुए अपनी मौलिक पहचान स्थापित की। उनकी कृतियों में आध्यात्मिकता के साथ–साथ सामाजिक चेतना भी निहित रहती हैं। वे अपनी चित्रों के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि कला का उद्देश्य केवल सौंदर्य की प्रस्तुति नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति भी है। यीशु मसीह विषयक उनके चित्र धार्मिक सहिष्णुता संस्कृति से समन्वय और मानवतावादी दृष्टिकोण के सशक्त उदाहरण है। उनकी दो महत्वपूर्ण कृतियाँ क्रूसिफिकेशन और लास्ट सपर इस मानवीय और आधुनिक दृष्टिकोण को स्पश्ट रूप से अभिव्यक्त करती है।

क्रूसिफिक्शन (Crucifixion) - क्रूसिफिक्शन विषयक उनकी कृति में यीशु को क्रूस पर दर्शाया गया है। परंतु यह प्रस्तुति पारंपरिक यूरोपीय शैली से भिन्न है, यह आकृतियां पूर्ण यथार्थवादी न होकर आंशिक रूप से अमूर्त और प्रतीकात्मक है। चेहरे यहां सीमित अस्पष्ट चित्रण आध्यात्मिक रहस्य और सार्वभौमिकता का संकेत देता है। रंगों का चयन अत्यंत प्रभावशाली है, विशेषकर लाल भूरे और नीले रंगों का प्रयोग पीड़ा, बलिदान और आंतरिक संघर्ष को गहन करता है। रेखाओं की तीव्रता और संरचना की गतिशीलता चित्र में नाटकीयता उत्पन्न करती है। क्रूस यहाँ केवल धार्मिक चिन्ह नहीं बल्कि समकालीन समाज में व्याप्त अन्याय और मानव संघर्ष का प्रति बन जाता है। इस प्रकार हुसैन की क्रूसिफिक्शन कृति धार्मिक घटना से आगे बढ़कर एक मानवीय और सामाजिक विमर्श प्रस्तुत करती है।

लास्ट सपर (Last Supper) - प्रकार 'लास्ट सपर' उनकी कृति बाइबल के विषयक अंतिम भोज के प्रसंग को आधुनिक भारतीय संदर्भ में पुन परिभाषित करती है। पारंपरिक पश्चिमी चित्रण में जहाँ दृश्यों को अत्यंत विस्तार और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया जाता है। वहीं हुसैन यहाँ कर्तव्यों का सरलीकरण और संरचना का लयात्मक संयोजन बनाया। 'लास्ट सपर' ईसाई परंपरा की वह घटना हैं, जिसमें यीशु अपने

शिष्यों के साथ अंतिम भोज करते हैं। हुसैन ने इसी प्रसंग को अपने पारंपरिक यूरोपीय पुनर्जागरण शैली से अलग हटकर आधुनिक भारतीय दृष्टि से रूपांतरित किया। हुसैन के लिए यह दृश्य केवल धार्मिक आख्यान नहीं बल्कि विश्वास विश्वासघात करुणा और आसान बलिदान की मानवीय कथा है। यीशु को केंद्र में रखकर शिष्यों को संतुलित कभी कभी जामिद से विन्यास में व्यवस्थित किया है। रंगों का का प्रयोग प्रतीकात्मक है और वातावरण में एक गंभीर चिंतनशील भांवत करता है।

हुसैन की इन दोनों कृतियों में आधुनिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय स्पष्ट है उन्होंने पश्चिमी धार्मिक प्रसंग को भारतीय आधुनिक कला के संवेदना के साथ जोड़ा। उनकी शैली में यथार्थ और अमूर्तन का संतुलन तीव्र रेखांकनों और रंगों की उर्जा चित्रों को विशिष्ट बनाती है। इन कृतियों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि एम.एफ. हुसैन ने ईसा मसीहा को किसी एक धर्म की सीमा में नहीं बांधा। बल्कि उन्हें मानवता के लगभग प्रतीक के रूप में चिन्हित किया, मैंने अपने शोध पत्र में क्रूसिफिकेशन और लास्ट सपर जैसी महत्वपूर्ण कृतियों के विश्लेषण के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है, कि किस प्रकार हुसैन ने आधुनिक भारतीय कला में यीशु के चित्रण को नई व्याख्या और नवीन दृष्टि प्रदान की। हुसैन की कृतियां न केवल कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वे समकालीन समाज में मानवता करुणा और सह अस्तित्व के मूल्यों को भी सशक्त रुप से अभिव्यक्त करती है।

साहित्यिकक्षेत्र – प्रस्तुत शोध का साहित्यिक क्षेत्र आधुनिक भारतीय कला में धार्मिक विषयों ,विशेषणः यीशु मसीहा के चित्रण से संबंधित उपलब्धता साहित्य तथा आलोचनात्मक लेखों, पुस्तकोन, शोध लेखों, प्रदर्शनी तथा डिजिटल स्रोतों के आधार पर आधारित है। यीशु मसीहा के जीवन चित्रण में यामिनी रॉय, कृष्ण खन्ना तथा एम.एफ. हुसैन के कार्यों पर भी विभिन्न कला इतिहासकारों और समीक्षकों ने विस्तार से विचार किया है। मेरे शोध पत्र में डिजिटल माध्यमों का भी उपयोग हुआ है। गूगल के माध्यम से विभिन्न कला संग्रहालय ऑनलाइन प्रदर्शनी और विश्वसनीय वेब साइटों से संबंधित सामग्री संकलित की है इन डिजिटल स्रोतों से कलाकारों की कृतियों के दृश्यों को समझने में सहायक भूमिका निभाई है साहित्यिक श्रोताओं में कला इतिहास संबंधी ग्रंथ शोध प्रबंध इन कलाकारों की शैली विषयवस्तु रंग योजना का कार्य के लिए मैंने इन तीनों कलाकारों की ये शो विष का चित्र कृतियों का गहन अध्ययन और विश्लेषण किया है।

शोध पत्र का निष्कर्षः– इस शोध पत्र को प्रोफेसर नजमा इरफान जीके कुशल निर्देशन से सफलतापूर्वक किया गया है, जिसको अध्याय में विभाजित किया है।

- प्रस्तुत शोध पत्र में आधुनिक भारतीय कला में यीशु मसीहा का चित्रण केवल धार्मिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है। बल्कि यह सांस्कृतिक समन्वय मानवीय संवेदना और आध्यात्मिक चेतना को व्यापक प्रतीक में उभारना है। विशेष रूप से यामिनी रॉय, कृष्ण खन्ना तथा एम.एफ. हुसैन की कृतियों के विश्लेषण से सिद्ध होता है कि इन कलाकारों ने एक विषय को अपनी–अपनी विशिष्ट शैली और दृष्टिकोण से रूपांतरित किया हैं।
- आधुनिक भारतीय कलाकारों ने यीशु विषयक चित्रों के माध्यम से कला को अंतर सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक चेतना का सशक्त माध्यम बनाया है।
- तीनों कलाकारों की कृतियां यह प्रमाणित करती है कि कला न केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति है, बल्कि वे समाज में सहिष्णुता एकता और मानवीय मूल्यों की स्थापना से भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती लें।

संदर्भ

1. बाइबल हिंदी अनुवादकः फादर कामिल बुल्के ये. स., नया विधान एवं स्रोत ग्रंथ, Divine Publisher, Kerala
2. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास डॉ. रीता प्रताप, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
3. आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ डॉ. प्रेम गोस्वामी
4. भारतीय कला डॉ. राजेश कुमार व्यास
5. कला इतिहास की पुस्तकें

Bibliography

1. Hussain Riding the lightning By Dyaneshwar Nadkarni
2. Indian Painting The lesser Known Tradition, Edited by Anna L.Dallapiccola
3. https://paintingmythology.blogspot.com
4. https://scroll. In
5. Google Arts & Culture
6. Museum websites
7. Research articles
8. Modern Indian Art – NCERT
9. Google Arts & Culture (www.artsandculture.google.com)